[Shahabuddin *, Vol.6 (Iss.8): August 2018] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: July 07, 2018 - Accepted: August 17, 2018) DOI: 10.29121/granthaalayah.v6.i8.2018.1423

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

वेणुगोपाल का आत्मसंघर्ष और कवि-कर्म

डॉ. शहाबुद्दीन [1]

[1] **सहायक प्रोफ़ेसर/प्रभारी, हिन्दी विभाग, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम शासकीय महाविद्यालय, संघप्रदेश दादरा नगर हवेली, सिलवासा-396230**

सारांश
वेणुगोपाल हिन्दी कविता में विशिष्ट पहचान रखते हैं। मोहभंग के वातावरण और सामाजिक यथास्थिति का आपकी कविता पर प्रभाव पड़ा। अकविता की ओर उन्मुख हुए। परंतु शीघ्र ही आपको उसकी प्रतिगामिता का बोध हुआ। परिणामस्वरूप प्रगतिशील धारा की ओर उन्मुख हुए। यथार्थ की जमीन ने भविष्य के सुन्दर-सुखद स्वप्नों को आकार दिया। आपकी कविता साधारणजन की आशाओं, स्वप्नों, अनुभूतियों, संवेदनाओं को रूपाकार देती है। यह उपेक्षितों-श्रमिकों के प्रति संवेदना रखते हुए भी मध्यवर्गीय कमजोरियों को उजागर करती है और सत्ता के विरुद्ध मोर्चेबन्द कार्रवाही की प्रस्तावक है। यह उसके दमन-शोषण-हिंसा का प्रतिकार करते हुए भी भविष्य के सुनहरे स्वप्न बाँटती है। इसमें सत्ता से मोर्चेबन्द कार्रवाही करते युवाओं हेतु रणनीति और रणकौशल की सामग्री मौजूद है। कहीं-कहीं यह बहुत विचारोत्तेजक है और सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ को रोचक ढंग से अभिव्यक्त करती है। इसमें जहाँ संवाद-शैली मौजूद है वहीँ इसकी सांकेतिकता बहुआयामी है। यह कविता व्यंग्यात्मक मुद्रा लेकर मीडिया की भूमिका को भी प्रश्नांकित करती है।

मुख्य शब्द – वेणुगोपाल, हिन्दी कविता

***Cite This Article:* डॉ. शहाबुद दीन**(2018). "**वेणुगोपाल का आ र्संघऔर कवि-र्कर**." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 6(8), 179-188. 10.29121/granthaalayah.v6.i8.2018.1423.

प्रस्तावना

कवि वेणुगोपाल का जन्म 22 अक्तूबर, 1942 ई. को आन्ध्रप्रदेश के करीमनगर में हुआ था। आपका वास्तविक नाम नंदकिशोर शर्मा था। मूलतः राजस्थानी थे। आरंभिक शिक्षा हैदराबाद में और लंबा समय आवारगी करने, इधर-उधर भटकने में व्यतीत हुआ। अयोध्या में दीक्षा ग्रहण कर संस्कृत का अध्ययन किया और हिन्दी साहित्य तथा दर्शनशास्त्र में साहित्य-रत्न की उपाधि प्राप्त की। 'चट्टानों का जलगीत' के फ्लेप पर लिपिबद्ध है- "1968-71 के दौरान औद्योगिक गाँव कागज नगर में अध्यापन के साथ-साथ मार्क्सवाद का अध्ययन भी चलता रहा। 1971 में कविता और राजनीतिक गतिविधियों के कारण वेणुगोपाल की गिरफ्तारी हुई। उसके बाद पुनः बेरोजगारी का दौर रहा। 1978 में 'विदिशा' में हिन्दी से एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1970 के आसपास नाटकों के प्रति रुचि का विकास हुआ। 1973 में भोपाल में श्री बी. वी. कारन्त से अभिनय व निर्देशन का प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा उन्हीं के निर्देशन में 'रसगंधर्व' और 'पंछी ऐसे आते हैं' नाटकों में अभिनय किया।"[1]

[Shahabuddin *, Vol.6 (Iss.8): August 2018] ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: July 07, 2018 - Accepted: August 17, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1403860

वेणुगोपाल का जीवन काफी संघर्षपूर्ण रहा। "परिवार के पास न तो कोई स्थायी संपत्ति थी और न घर। शर्मा परिवार मंदिर का पुजारी था और वेणुगोपाल को संपत्ति के रूप में पूजा-पाठ करने के लिए वह मंदिर ही मिला था। उसी मंदिर के अहाते में उनका परिवार रहता था। उनकी माँ, पत्नी और पुत्र-पुत्री। मार्क्सवादी और आवारगी पसंद वेणु की मानसिक प्रकृति के मेल में नहीं था-मंदिर के पुजारी का काम। लेकिन थक-हारकर अंतिम दिनों में वे यह दायित्व भी निभाने लगे थे और अपने परिवार के साथ मंदिर के प्रांगण में ही रहते थे।"[2]

प्रोफेसर गोपेश्वर सिंह द्वारा खींचा आपका शब्दचित्र- "मझोले कद का एक व्यक्ति कंधे से झोला और छाती से दो चार किताबें चिपकाकर धरती को दबाता और झूमता-सा चला आ रहा है। ...पास आने पर मैंने देखा—गठा हुआ शरीर, पके बिखरे बाल, खुंटियाई दाढ़ी, मुस्कराता चेहरा, ताँबई-झँवाया रंग, काम चलाऊ ठीक-ठाक पैंट-शर्ट।"[3]

'गैंग्रीन' की बीमारी वेणुगोपाल को 'निजाम इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस' में ले गई। बीमारी के लाइलाज होने की सूरत में 2003 ई. में आपका पैर काटना पड़ा। जीवन-संघर्ष का यहीं अंत नहीं हुआ। अंतिम दिनों में 'कैंसर' ने जकड़ लिया। इसी से 1 सितंबर, 2008 ई. को आपका निधन हुआ।

आपकी रचनात्मकता का स्फुटन 'कहानी' से हुआ। पहली कहानी (एक कटोरी दूध की) लिखने की कथा रोचक है। "घर में एक छोटा कुत्ते का पिल्ला था। पीछे एक गौशाला थी। जहाँ से उसे एक कटोरी दूध दिया जाता था। गौशाला के प्रभारी को पता चलने पर उन्होंने कर्मचारियों को डाँटकर, दूध देने से मना कर दिया। माँ और घर की अन्य वरिष्ठ महिला सदस्यों को अखरा और उन्होंने मुझसे कुछ प्रतिरोध-रूपी लिखने को कहा। मैंने पिल्ले को केंद्रीय चरित्र बनाकर एक कहानी लिखी जो घर की महिला-श्रोताओं में काफी सराही गयी।"[4] वहीं "पहली कविता जब लिखी—१९ मार्च, १९६० को—तो सिर्फ़ इतनी ही मंशा थी कि मम्मा के सामने खड़ी की गयी अपनी छवि (मैं आपके लिए सब-कुछ कर सकता हूँ-नुमा) को धुंधलाने न दूँ और उन्होंने यह पूछकर कि तुम कविता नहीं लिख सकते क्या?—जैसे चुनौती दी थी और मैंने जवाब में कविता, पहली, लिखी थी।"[5]

अब तक आपने नीरज के गीत और साहिर की फिल्मी शायरी और बृजभाषा के कुछ पद ही पढ़े, सुने और जाने थे। कालांतर में आप बच्चन-नीरज की पैरोडी करने लगे। साहित्य-लेखन का उद्देश्य क्या है और उन्हें जाना कहाँ है? इससे वे अपरिचित थे। "लगा यों कि मैं बिना सोचे-समझे रेल पर बैठ गया हूँ, बिना-टिकट—और रफ़्तार मुझे लिये चली जा रही है। कहाँ?—तब न तो जानता था और न जान सकने की कोई गुंजाइश थी।" यह स्थिति ज्यादा दिन न रही। "हैदराबाद में पैदा होने और पले-बढ़े होने के कारण उनका संपर्क तेलंगाना आंदोलन के नेताओं से तो था ही, तेलुगू की क्रांतिकारी काव्यधारा से भी था। वरवर राव, ज्वालामुखी आदि उनके समकालीन थे और उन सबसे उनकी सहज मैत्री भी थी।"[6] इन रचनाकारों के सानिध्य और हैदराबाद के साहित्यिक परिवेश ने आपकी समझ को विकसित किया। शीघ्र ही साहित्य-कर्म के प्रति गंभीर हो गए। बक़ौल वेणुगोपाल आपकी कविता "कविता होने से पहले यात्रा-संस्मरण हैं या डायरी के पन्ने या कई-कई लड़ाइयों के कविता-नुमा रिपोर्ताज" हैं जो उनका "निजी सच" हैं। हालाँकि 'कविता' शीर्षक कविता में आपने लिखा-

कविता...
शायद एक गुफ़ा है
जहाँ लड़ाई से बचने के लिए
मुझे बार-बार आना है।
धूप हो या बरसात
यहीं सिर छुपाना है।
या फिर कायरता का एक दस्तावेज़ है

जिसे खुद ही लिखना है
और खुद को ही सुनाना है।[7]

यह वह दौर था जब आजादी के स्वप्नों के टूटने, आशाओं के दरकने, प्रतिभाओं के भटकने की गूंज सुनाई दे रही थी। सामाजिक विसंगति/यथास्थिति ने मुक्ति की छटपटाहट को बढ़ा दिया। लोगों का व्यवस्था से मोहभंग होने लगा। कुछ कवि अकविता की ओर उन्मुख हुए तो कुछ क्रांतिकारी धारा से संबद्ध। वेणुगोपाल 'कन्फ्यूज' थे। 'विरोधाभास' कविता में लिखा-

रास्ते दो ही हैं—
पेट में दार्शनिकता का पेड़ उगा
डालियों को घूरते हुए
विद्रोह के नपुंसक संकल्प करना
या
पत्नी की छातियों, कपोलों
और कमर को देख
हठात अपने को मर्द जान
नितांत आरोपित कामुकता
औढ
उस पर झुक जाना
और
विरोधाभास यह है कि मैं
दोनों ही रास्ते
एक साथ अपनाना चाहता हूँ।[8]

स्वीकार का यह भाव कवि को बड़ा बनाता है। कुछ न कर पाने की छटपटाहट 'आज सवेरे-सवेरे' और 'कोशिश में हूँ' कविताओं में भी व्यक्त हुई। 'ढहते हुए पहाड़' कविता में अकविता की तरह का रंग और शब्दावली मौजूद है। हालाँकि वे कहना कुछ ओर चाहते थे। 'सच तो यह है' कविता से निम्न पंक्तियाँ देखिए-

सुनो!
नारी ही गुरु हो सकती है, इस मामले में।
जो 'मैथुन' और 'प्रसव' जैसी उबाने वाली
एक रस, पुरातात्विक प्रक्रियाओं को
अपने शरीर पर तटस्थता और भागीदारी—
दोनों दृष्टिकोणों से एक साथ झेलती हुई
उतनी ही स्पष्टता के साथ वह महीने में एक बार
ऐंठन महसूसते हुए रजस्वला होती है
या/गर्भवती होने पर, एकांत में, फुले हुए पेट को
याद-भीगी निगाहों से देखती है।[9]

वे शीलता-अश्लीलता के प्रश्न पर विचार न कर संवेदना के नए धरातल को खोजते हैं-

आज भले ही हम विचारों की नपुंसकता को
माथे पर
तिरंगे झण्डे की तरह फहराते हुए पुष्ट उरोजों

और कदली जंघाओं से दूर भागते रहे, पर
हमें याद करना ही होगा स्त्री-शरीर के
उस अंश को, जो हमारा उत्स है और
जो सिर्फ़ इसीलिए तथाकथित
ईश्वरीय दिव्यता पाने का हकदार है।
और यह भी कि हमने
उरोजों के पश्चाद-रुप स्तनों को न चूसा होता
तो आज हम—हम न होते।[10]

वेणुगोपाल मानते हैं कि उन्होंने अकविता नहीं लिखी। 'कल की ही तो बात है' कविता में लिखते हैं-

मुझे नहीं पता कि 'वह' से मैं 'मैं' में कब
तब्दील हुआ। बस, इतना जानता हूँ
और संतुष्ट हूँ कि उस काया-रूपांतरण के दौरान मैंने
कोई अकविता नहीं लिखी।[11]

यही वह बिन्दु है जहाँ से उनका कायांतरण हुआ। 'मुरदे' कविता में वैचारिक परिवर्तन की अनुगूँज सांकेतिक रूप में दर्ज हुई है। उनका झुकाव स्वाभाविक रूप से क्रांतिकारी काव्य-परंपरा की ओर हुआ। वहाँ उनका सामना वामपंथी अवसरवाद और मध्यवर्गीय दुचित्तेपन से हुआ। वह न केवल स्वयं को उनसे दूर रखता है, बल्कि उसकी चारित्रिक दुर्बलता को भी उजागर करता है। धीरे-धीरे उसके समक्ष सत्ता का वास्तविक चरित्र स्पष्ट और कुरूप चेहरा बेपर्दा होता है। इस दौर की काफी कविताएँ फैंटेसीपरक हैं और संवाद-शैली में लिखी गई हैं। इनमें कवि न केवल वैचारिक कार्यक्रम की, बल्कि अपने उद्देश्य और स्वप्न की भी सीधी प्रस्तुति करता है। अब वह क्रांतिकारी आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाने लगा। परिणामतः "हैदराबाद से कुछ दूर कागज नगर में वेणुगोपाल गिरफ्तार हुए। जिस कमरे में उन्हें रखा गया, वह भयंकर यातनागृह था। उनकी गिरफ्तारी की सूचना पूरे देश में फैली और नई ऊर्जा के कवि के रूप में हिन्दी काव्य-संसार में वेणु का प्रवेश हुआ। नक्सलवादी चेतना की लहर से निकले इस कवि को जनता ने सिर-माथे पर बिठा लिया।"[12]

अब तक वे क्रांति के प्रति पूर्णत: समर्पित हो चुके थे। सत्ता की हिंसा में वृद्धि से लोगों में भय और घबराहट उत्पन्न होती है। वे उस बेचैनी को शब्दबद्ध करते हुए स्वयं अविकल, अविचलित रहते हैं। डरते नहीं, बल्कि भयावह परिवेश में भी भविष्य का कार्यक्रम और रणनीति बनाते रहते हैं। 'जेल में एक कविता' कविता में उन्होंने लिखा-

क्या खयाल हैं आपके?
शायद आप इस सोच में मुब्तिला हैं
कि मैं परेशान हो रहा हूँ—
और मेरी हालत यह है कि इस अंधेरे
कुएँ में/पड़ा हुआ भी
रोशनी के लिए उत्सुक
कतई नहीं हो रहा हूँ
आपके कर-कमलों से तैयार हुए
इस तिलिस्म की यातना को
चुस्कियों में पी रहा हूँ।[13]

वेणुगोपाल स्त्री-मजदूर-किसान-आदिवासी को सीधे संबोधित नहीं करते, बल्कि वैचारिक और रणनीतिक लड़ाई लड़ते हैं। अपने साथी गुरिल्ला यौद्धाओं जोकि शोषित-उपेक्षित वर्ग से हैं, को सचेत करते हैं। उनकी कविता नक्सली आंदोलन

के साथ सिर्फ सहानुभूति ही नहीं रखती, उसके पक्ष में खड़ी होकर सत्ता से मोर्चा भी लेती है। वह सत्ता के दमन-शोषण, आतंक-हिंसा आदि का निर्भीक चित्रण करती है। हालाँकि वेणुगोपाल की कविताओं में दमन और संघर्ष के चित्रों की भरमार है परंतु उसमें प्रेम, प्रकृति, सौन्दर्य, निजी व बैयाक्तिक अनुभूतियों के चित्र लगभग अनुपस्थित हैं। 'लोग और लोग और मेरी कविता' में उन्होंने लिखा-

> मत कहो! आत्मीयता, प्रेम या ऐसा ही कोई और शब्द।
> अगर इन्हीं का मोह होता तो घर ही क्या बुरा था? बहन
> द्वारा कहा गया 'भैया' सम्बोधन, पत्नी की मेंहदी-रंजित
> हथेली और यहाँ तक कि हिमालय-सी बुलन्द
> देहलीज़ भी वे कभी किसी मसीहा के/होठों को नसीब नहीं हुई होगी।[14]

उनकी कविता की एक खास शैली है पाठक से संवाद करने की क्षमता। वह पाठक से बोलती-बतियाती है और वैचारिक आदान-प्रदान कर संवाद स्थापित करने की कोशिश करती है। संवाद की इस प्रक्रिया में कवि अपने विरोधियों को जवाब देता है और उन्हें उनकी सीमाओं से अवगत कराता है।

'हवाएँ चुप नहीं रहतीं' काव्य-संग्रह की अधिकांश कविताएँ प्रतीकात्मक हैं। प्रतीकात्मकता ऐतिहासिकता आवश्यकताओं का परिणाम थी। इसकी कविताओं के कई बिम्ब जटिल हैं। 'एकदम समय' कविता से निम्न पंक्तियाँ देखिए-

> इस बरसात के
> जिसमें
> वह दुबारा ज़िंदा हुई है। समय
> एकदम असमय है और कुछ
> ऐसे फूहड़ तरीक़े से लेटा हुआ है
> कि उसके पाँव
> सड़कों पर हैं और धड़
> मेरी आँखों की ज़िंदा हो चुकी
> दुनियाँ के बीचोंबीच।[15]

'काले भेड़िए के खिलाफ़' कविता प्रतीकात्मक कविता है। इसमें 'काला भेड़िया' सत्ता का प्रतीक है। जब कवि भेड़िए शब्द का प्रयोग करता है तो स्वतः ही उसके गुण-दोष, प्रवृत्ति सत्तावर्ग पर आरोपित हो जाती है। कविता के अंत में कवि आशा व्यक्त करता है-

> जानना इतना भर जरूरी है
> कि हर कहानी का एक अंत होता है। और
> यह जानते ही
> भविष्य तुम्हारी ओर मुस्कराकर देखेगा। तब
> इतना भर करना
> कि पास खड़े आदमी की ओर इशारा कर देना
> ताकि वह भी
> भेड़िए के डर से काँपना छोड़
> जंगल की सनातन खूबसूरती को
> देखने लग जाय।[16]

वेणुगोपाल संभावनाओ के कवि हैं। सत्ता की विध्वंसक भूमिका में भी वे निराश नहीं होते। वे अंधेरे की ओर इशारा करते हुए जनता को अपने रणकौशल से परिचय कराते हैं। वहीँ 'हवाएँ चुप नहीं रहतीं' कविता में सत्ता के विरुद्ध क्रांतिकारी गतिविधियों की ओर संकेत करते हैं। "हवाएँ/कभी चुप नहीं रहतीं। आगामी सुबह/के रूप-बखान में मुब्तिला/वे/इस वक्त भी सक्रिय हैं। चंद/अटूट उम्मीदों में।" उनकी क्रांतिकारिता का कारण 'देखना और सुनना' कविता में दर्ज हुआ है। लिखते हैं-

देखने के नाम पर
मेरे पास सिर्फ़ वह अंधेरा है
जो बढ़ता ही चला जा रहा है
लेकिन सुनने के नाम पर
ढेर सारी किलकारियाँ हैं
घुटनों के बल
खिसक-खिसक कर आते हुए बच्चों की।
मैं
जो कुछ भी देख पा रहा हूँ
वह आज है।
लेकिन जो सुन रहा हूँ
वह आने वाला कल है।[17]

'मैं गुज़र रहा हूँ' कविता सौन्दर्य से ज्यादा श्रम पर बल देती है। कवि शारीरिक या मांसल सौन्दर्य के पक्ष में नहीं, बल्कि श्रम के सौन्दर्य के पक्ष में है। 'सफर' कविता में कवि का वैचारिक स्वप्न प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त हुआ है। कविता पढ़कर अहसास होता है कि वे रोमानी क्रांति के पक्षधर नहीं, बल्कि यथार्थवादी क्रांति के पैरोकार हैं। इसीलिए वे क्रांति से पूर्व सभी रणनीतिक तैयारियाँ पूरी कर लेना चाहते हैं। लिखते हैं-

सफ़र पर निकल तो पड़े हो लेकिन याद रखो
कि सफ़र के लिए जितनी जरूरत पैरों की
होती है, उतनी ही इस तैयारी की भी और
उतनी ही एक खूबसूरत मंजिल की भी, जो
तुम्हारे पास रहे। पहले से ही।
सफ़र पे निकल तो पड़े हो
मंजिल को मुट्ठी में कस लिया है कि नहीं?[18]

कवि क्रांतिकारी लड़ाई हेतु प्रत्येक गतिविधि पर कड़ी दृष्टि जमाए है। वह किसी भी सूरत में असफलता नहीं चाहता। वह निरंतर लड़ाई में शामिल रहा है। तभी उसे मालूम है कि लड़ाई कौन सी मंजिल पे है। 'कौन बचता है' कविता में लिखा हैं-

जहाँ
इस वक्त
कवि है
कविता है
वहाँ
जंगल है और अंधेरा है और है
धोखेबाज़ दिशाएँ।

दुश्मन सेनाओं से बचने की कोशिश में
भटकते-भटकते
वे यहाँ आ फँसे हैं। जहाँ से
इस वक्त
न आगे बढ़ा जा सकता है
न पीछे ही लौटा जा सकता है।[19]

'फ़ुरसत के अभाव में' कविता संवाद शैली में लिखी गई व्यंजनाधर्मी कविता है। इसका आरंभ रोचक और व्यंग्य चुटीला है। "सब फ़ुरसत की बात होती है, प्यारे।/वरना क्या वजह है जो/हमारे इस महान जगद्‌गुरू देश में/क्रांति जैसी बेहद मामूली हरकत तक/नहीं हो पा रही है।" इनके मध्य में कई स्थानों पर महत्वपूर्ण संकेत हैं। इसमें सामाजिक यथार्थ को राजनीतिक कटाक्ष करते हुए प्रस्तुत किया गया है।

शायद आप नहीं जानते
(और शायद इंदिरा गांधी भी नहीं जानती होंगी)
कि आज भी गाँव के बाहर सण्डास के लिए बैठी
भारतीय साध्वियाँ—
राहगीरों की बात तो दरगुजर
पूरी की पूरी रेलगाड़ी को नजर-अंदाज कर जाती हैं
घर के पिछवाड़े हमारे नौनिहाल
सेक्स के क्षेत्र में नये-नये साहसिक
प्रयोग करते रहते हैं और
साथ ही अपनी माँ से रामायण और
बाप से हनुमान चालीसा भी सुनते रहते हैं[20]

वर्तमान सरकार इस दिशा में सकारात्मक प्रयास कर रही है। 'अखबार में' कविता में कवि व्यंग्य का प्रयोग कर पत्रकारिता के यथार्थ को प्रत्यक्ष करता है। वह संवाद शैली में पत्रकारिता के चरित्र को उघाड़ते हुए बताता है कि पत्रकारिता अब मिशन नहीं, व्यवसाय बन चुका है। अखबारों और चैनलों में खबरें कम विज्ञापन ज्यादा होते हैं। जीवन की सच्चाई से उनका सरोकार नहीं। आम आदमी से जुडी घटना तभी खबर बनती है जब उसमें सनसनी हो। ख़बरें में तथ्यों से ज्यादा अफवाहें हैं। अक्सर ये खबरें अस्पष्ट और अंतर्विरोधों से परिपूर्ण होती हैं जो जनता में भ्रम की स्थिति बनाती हैं। विडम्बना है कि लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ ऐसी खतरनाक भूमिका में है। परिहास की शैली देखिए-

धत् तेरे की! यह सब थोड़े ही छपता है
अखबार में! उसमें तो खबरें छपती हैं।
जैसे तुम किसी का खून कर दो या हत्या,
डकैती, बलात्कार—
समझ गये ना?[21]

वेणुगोपाल की 'जनरल डॉयर' कविता आजादी के समय घटित 'जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड' की स्मृति पर आधारित है। इसमें मुक्तांचल बनाने निकले उग्रवामपंथी युवाओं की सत्ता द्वारा व्यापक पैमाने पर की गई हत्या, दमन और हिंसा का विशद चित्रण है। कवि ने इसकी तुलना क्रूर साम्राज्यवादी शासन से की है। वह 'जनरल डॉयर' का उल्लेख कर 'अपने शासन' के वास्तविक चरित्र का उद्‌घाटन करता है। वह सरल भाषा में लिखता है-

सत्ताइस
बरसों में सारा का सारा

 ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: July 07, 2018 - Accepted: August 17, 2018) DOI: 10.5281/zenodo.1403860

मेंकप तो उतर चुका। बेकार ही
खुद को क्यों धोखा दे रहे हैं! उसे देखकर
खामखा ग़लतफ़हमी के शिकार हो रहे हैं—
कि यह शहर-कोतवाल है या मुख्यमंत्री या फिर
प्रधानमंत्री। जबकि
वह साफ-साफ उस सामने वाले जलियाँवाले बाग
का हीरो
जनरल डॉयर है। जो
आईने के सामने खड़ा है। और
मुस्कुरा रहा है। और
कह रहा है—
'स्थिति नियंत्रण में है।'[22]

वेणुगोपाल ने अपनी काव्य-यात्रा के दौरान निरंतर अपनी भाषा को सँवारा है। परिस्थितियों का उनकी भाषा पर गहरा प्रभाव रहा है। वे विषयवस्तु की माँग के अनुरूप भाषा गढ़ते हैं और भाषा-प्रयोग को लेकर संकीर्ण रुख नहीं अपनाते। हैदराबाद के वातावरण के प्रभावस्वरूप उनकी कविता उर्दू के शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग करती है। भाषा के हिन्दुस्तानी रूप की गांधीजी और प्रेमचंद ने हिमायत की थी।

लेकिन
वह
तुम्हारे और दुनिया के बीच में है
इसलिए
तुम उसके बन्दी हो।
बन्दी की इच्छाएँ
और
उसके खयाल
यहाँ तक
कि वह खुद भी
एक छलांग होता है
—ख़्वाबों के ऐन बीच में।
हर बन्दी
एक मुजस्सिम ख़्वाब होता है
आखिरकार।[23]

वेणुगोपाल की चर्चित, लम्बी और फैंटेसीपरक कविता है 'ब्लैक-मेलर'। नौ खंडों में विभाजित यह कविता हर खंड में नई एक नई भूमि तलाशती है। कविता में आया 'वह' कभी भी उसके समक्ष खड़ा हो जाता है और तरह-तरह के प्रश्न पूछता है। यह कवि का 'अवचेतन' है जो डर के समय प्रकट होता है। कविता में 'सिंदबाद के सिर पर बूढ़े द्वारा कहानी कहना', 'अलादीन के जिन और चिराग़', 'तुलसी कृत रामचरित मानस' और 'काफ्का' का उल्लेख करना कवि के सांस्कृतिक पक्ष को स्पष्ट करता है। इनसे कवि अपने संघर्षरत साथियों को विषम स्थिति में भी धैर्य रखने की प्रेरणा देता है। 'ब्लैक-मेलर' उसके मन का वह विचार है जो मध्यवर्ग की स्थिति को लेकर शंकित है और मुक्तिबोध की तर्ज पर बार-बार पूछता है 'आखिर तुम्हारा स्टेंड क्या है?' 'वह' साये की तरह उसके साथ रहता है-

तेलंगाने का जुलूस निकल रहा था और वह

मेरे साथ था।
विद्यार्थियों और मज़दूरों पर गोली चल रही थी और वह
मेरे साथ था।
नक्सलबाड़ी और श्रीकाकुलम में सरकारी ताक़त को
मुंह तोड़ जवाब दिया जा रहा था और वह
मेरे साथ था।
अकाल के वक़्त, बाढ़ के वक़्त, हड़ताल के वक़्त
गर्ज कि हर अहम मौके पर वह
मेरे साथ होता है।[24]

यह कविता जीवन के विविध पक्षों को एक साथ उठाती है। कई स्थान पर कवि भावुक हो गया है। इससे उसका भाषा पर नियंत्रण नहीं रहता। उसका आक्रोश उसकी भाषा को अस्थिर बना देता है। जैसे- "क्यूबा-वियतनाम की बातें चोदने वाले/पब्लिक-गार्डन में मुरझाते फूलों की फिक्र में/दुबले होते रहते हो"। कविता की भाषा-बिम्ब उल्लेखनीय हैं। कहीं आशा का स्वर है तो कहीं हताशा का।

वस्तुतः वेणुगोपाल की कविता विकास की विभिन्न मंजिले तय करती हुई जीवन के विविध पक्षों को पकड़ती हैं। अकविता आन्दोलन उसके सामने विभ्रम तो रचता है परंतु उसकी चेतना उसे क्रांतिकारी आन्दोलन के निकट ले जाती है। उसका आक्रोश और तेवर उसकी जनपक्षधरता का सूचक है।

संदर्भ:-

1. चट्टानों का जलगीत, वेणुगोपाल, शीर्षक प्रकाशन, हापुड़, प्रथम संस्करण-1980, फ्लेप से।
2. आलोचना का नया पाठ, गोपेश्वर सिंह, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-2011, पृ.-220
3. उपर्युक्त, पृ.-219
4. वेणुगोपाल का काव्य: सत्ता और समाज, लघुशोधप्रबंध संख्या-D00013539, परिशिष्ट से, केंद्रीय पुस्तकालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
5. वे हाथ होते हैं, वेणुगोपाल, अनादि प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, पृ.-1
6. आलोचना का नया पाठ, उपर्युक्त, पृ.-220
7. वे हाथ होते हैं, उपर्युक्त, पृ.-1
8. उपर्युक्त, पृ.-17
9. उपर्युक्त, पृ.-27
10. उपर्युक्त, पृ.-28
11. उपर्युक्त, पृ.-30
12. आलोचना का नया पाठ, उपर्युक्त, पृ.-222
13. नक्सलबाड़ी के दौर में, वीरभारत तलवार, अनामिका पब्लिशर्स, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण-2007, पृ.-541
14. वे हाथ होते हैं, उपर्युक्त, पृ.-69
15. हवाएँ चुप नहीं रहतीं, वेणुगोपाल, संभावना प्रकाशन, हापुड़, प्रथम संस्करण-1980, पृ.-26
16. उपर्युक्त, पृ.-17-18
17. उपर्युक्त, पृ.-22
18. उपर्युक्त, पृ.-34

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
(Received: July 07, 2018 - Accepted: August 17, 2018)
DOI: 10.5281/zenodo.1403860

19. उपर्युक्त, पृ.-47
20. उपर्यक्त, पृ.-53-54
21. उपर्युक्त, पृ.-59
22. उपर्युक्त, पृ.-71-72
23. चट्टानों का जलगीत, उपर्युक्त, पृ.-76-77
24. उपर्युक्त, पृ.-108-09

*Corresponding author.
E-mail address: sagarashi@ rediffmail.com